ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 51-55
ISSN NO.-2347-2944
Vol-12, Issues-XII YEAR 2018 Extra

प्रथम स्वाधीनता संग्राम में संगीत क्षेत्र की भूमिका एवं योगदान

निष्ठा शर्मा

असिस्टेन्ट प्रोफेसर, संगीत गायन, महात्मा गाँधी बालिका पी0जी0 कालेज, फिरोजाबाद (उ0प्र0),भारत

Received- 04 .05. 2018, Revised- 09 .05. 2018, Accepted - 16.05.2018 E-mail: nishthass7@gmail.com

सारांश : *मई 1857 ई0 में भारतीयों ने औपनिवेशिक सत्ता के विरूद्ध क्रान्ति का शंख फूंक दिया था, यह सही है कि यह क्रान्ति सफल न हो सकी किन्तु उसकी अनुगुंजे बाद के वर्षों में लगातार औपनिवेशिक सत्ता को सताती रही। यद्यपि इससे पूर्व भी अंग्रेजी सत्ता के विरूद्ध भारतीय प्रतिरोध का इतिहास रहा है तथापि 1857 की क्रान्ति भारतीय इतिहास में अपने राष्ट्रव्यापी प्रसार, अपने स्वरूप, स्वतंत्रता हेतु संगठित प्रयास के कारण हमारे राष्ट्रीय स्वाभिमान की धुरी के रूप में अंकित है।*

कुंजी शब्द – औपनिवेशिक क्रान्ति, अनुगुंजे, सत्ता, प्रतिरोध, स्वाभिमान, प्रसार, स्वरूप, स्वतंत्रता।

अनेक इतिहासकारों एवं लेखकों द्वारा 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में विभिन्न वर्गों, क्षेत्रों की भूमिका का विस्तृत विवेचन किया गया है किन्तु क्रान्तिकालीन स्वातंश्य भावना से प्रभावित होकर इस स्वाधीनता संग्राम में संगीत क्षेत्र की भूमिका तथा इसके तत्कालीन तथा पश्चातकालीन प्रभावों के विश्लेषण हेतु पर्याप्त प्रयत्न नहीं हुये हैं। प्रथम स्वाधीनता संग्रामकालीन जनयुद्धों की पेन्टिंग्स, लिथोग्राफों और फोटो चित्रों के लिए हमें अभी भी औपनिवेशिक स्रोतों और ब्रिटिश कलाकारों के दुराग्रहों के बावजूद उन्हीं पर निर्भर रहना पड़ता है। भूतपूर्व रियासतों के संग्रहालयों में मौजूद सामग्री की राष्ट्रीय स्तर पर अभी कोई सूची ही नहीं बनी है और आज इसका अनुमान भी नहीं किया जा सकता कि उसका कितना भाग नष्ट हो चुका है और कितना शेष है। प्रथम स्वाधीनता संग्राम के देशव्यापी विस्तार पर यदि हर राज्य के अभिलेखागारों, पुरानी रियासतों के संग्रहालयों और केन्द्रिय अभिलेखागार की ओर से अप्रकाशित सामग्री की विषयवस्तु ओर चुनी हुई चीजों का प्रकाशन हो तो इतिहास ही नहीं, संगीत, लोकनाट्य, लोकगीत आदि का अभूतपूर्व खजाना अवश्य ही हमारे सामने आयेगा।

यह क्रान्ति पूरी एक षताब्दी तक औपनिवेशिक शासन के अन्याय और अत्याचार को सहती आई जनता के मन में भीतरी कसमसाहट के रूप में करवटें ले रही थी। यह कहना उचित नहीं होगा कि 1856 में अवध के अपहरण की घटना इसका प्रमुख कारण थी। परतन्त्रता का क्लेश स्वयं अपने आप में सबसे बड़ा कारण था। क्रान्ति की धीरे–धीरे सुलग रही चिंगारियों ने मात्र उत्प्रेरक तत्व का कार्य किया था जिसके फलस्वरूप 1857 में इन चिंगारियों ने भीषण ज्वाला का रूप ले लिया। अंग्रेजों द्वारा अवध के अपहरण के पश्चात् हजारों लोगों ने अवध से भारत के विभिन्न क्षेत्रों में विस्थापन किया उनमें से अनेकों ने क्रान्ति के प्रचार व प्रसार में योगदान दिया। उदाहरणार्थ पटना के पीर अली आदि इस श्रृंखला की ही एक कड़ी थे।

स्वाधीनता की प्यास समाज के सभी वर्गों तथा क्षेत्रों में कम–अधिक बनी हुई थी। संगीत क्षेत्र भी इसका अपवाद नहीं था। अवध तथा अवध से विस्थापित अनेक प्रसिद्ध तथा अप्रसिद्ध कलाकारों ने स्वाधीनता के प्रथम महासमर में योगदान दिया तथा अनेक कलाकारों ने स्वातन्श्य वेदिका पर अपने प्राणों का उत्सर्ग कर दिया।

नवाब हशमतजंगः फर्रूखाबाद के तत्कालीन नामधारी नवाब तथा सुप्रसिद्ध सितार वादक नवाब हशमतजंग अपना अधिकांश समय लखनऊ में ही व्यतीत करते थे। नवाब वाजिद अली शाह के साथ उनके मित्रवत् सम्बन्ध थे तथा उनकी संगीत मंडली में उन्हें महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था तथा वाजिद अली शाह के कलकत्ता प्रयाण के पश्चात् वापस अपनी पूर्व रियासत फर्रूखाबाद वापस चले गये थे। 1857 में जब क्रान्ति का विस्फोट हुआ तो नवाब ने क्रान्तिकारी संगठन में सक्रिय भूमिका निभाई और लगभग सात मास तक फर्रूखाबाद जनपद में क्रान्ति का कुशल नेतृत्व किया। 3 जनवरी, 1858 को जब अंग्रेजों ने पुनः फर्रूखाबाद पर अधिकार किया तो वे बरेली चले गये तथा बरेली के पतनोपरान्त नेपाल पलायन कर गये।1 अंग्रेजों द्वारा उन्हें पकड़वाने हेतु दस हजार रूपये इनाम की घोषणा की गयी। अतः जनवरी 1859 के पश्चात् किसी समय नवाब ने आत्मसमर्पण कर दिया। उन्हें पहले मृत्यु दण्ड दिया गया किन्तु यह तथ्य सामने आने पर कि कमांडर–इन–चीफ कार्यालय से सम्बद्ध स्पेशल कमिश्नर मेजर बारलो के लिखित आंमत्रण पर उन्होंने सशर्त आत्मसमर्पण किया था, अत्यधिक विवाद और इस कृत्य हेतु मेजर बारलो की आलोचना के पश्चात् नवाब को पहले अदन और फिर मक्का निष्कासित कर दिया गया जहां 19 फरवरी 1882 को वे मृत्यु को प्राप्त हुए।

नवाब सखावत हुसैन खाँ : नवाब हशमतजंग के

अनुरूपी लेखक

छोटे भाई नवाब सखावत हुसैन खाँ भी अवध दरबार से सम्बद्धता के कारण लखनऊ में ही निवास करते थे। नवाब हशमतजंग की अपेक्षा कम ख्याति प्राप्त किन्तु प्रवीण संगीतज्ञ नवाब सखावत हुसैन खाँ अंग्रेजों के द्वारा अवध के अपहरण के पश्चात् वापस फर्रूखाबाद चले गये थे। सन् 1857 क्रान्ति के विस्फोट होते ही वे अपने परिवार के अन्य सदस्यों के साथ स्वातन्श्य समर में कूद पड़े। वे उग्र विचारधारा के पोषक थे तथा कहा जाता है कि फतेहगढ़ में नवाब हशमतजंग की अनिच्छा के बावजूद 23 जुलाई, 1857 को अंग्रेज बंदियों के नरसंहार में उनकी सक्रिय भूमिका थी।2

बदनाम अंग्रेज मजिस्ट्रेट पॉटर जो 'हैगिंग पॉटर' के नाम से कुख्यात था, के उल्लेख के बिना नवाब सखावत हुसैन खाँ का प्रसंग अपूर्ण ही रहेगा। यह कुख्यात मजिस्ट्रेट फांसी देने का इतना शौकीन था कि इसके आदेश से फतेहगढ़ के आसपास एक–एक दिन में सौ–सौ लोगों को फांसी पर चढ़ा दिया गया, यहां तक की यह एक अंग्रेज महिला मिस मैरी जो एक अंग्रेज डाक्टर लोगिन की पुत्री थी, को नवाब के हरम में रहते हुए गर्भवती हो जाने के अपराध में फांसी दे देना चाहता था।3 नवाब इब्राहीम अली के अनुसार मैरी और पॉटर के मध्य अंतरंग सम्बन्धों के फलस्वरूप मैरी गर्भवती हो गई थी तथा पॉटर इन सम्बन्धों के सार्वजनिक हो जाने तथा इस कारण नौकरी चले जाने के भय से मैरी को रास्ते से हटाना चाहता था और मैरी वास्तव में अपने प्राणरक्षा हेतु नवाब हशमतजंग की शरण में गयी थी4 किन्तु श्री मोमिन खाँ तथा इरफान खाँ अपने वंशीय स्मृति अवशेषों के आधार पर बताते हैं कि मिस मैरी का सम्बन्ध नवाब हशमतजंग से नहीं अपितु नवाब सखावत हुसैन खाँ से था। उन दिनों अनेक अंग्रेज अधिकारी व अन्य अंग्रेज भारतीय जीवन पद्धति का अनुसरण करते थे। वे हुक्का पीते थे तथा शेरवानी पहनते थे। ऐसी अनेक महफिलों का आयोजन सामान्य था जिनमें मदिरा व दावत के अलावा भारतीय संगीत की स्वर लहरियां तथा नृत्यांगनाओं के मादक नृत्य उन्हें मदहोश रखते थे। मिस मैरी भी भारतीय संगीत से प्रभावित होकर नवाब सखावत हुसैन खाँ की शागिर्द बन गयी थीं तथा यह सम्बन्ध शागिर्दगी से कहीं आगे बढ़ गया था। अर्नेस्ट जोन्स तथा मेजर रिचर्ड विलियम्स की भांति यह भारतीय संगीत प्रेमी महिला नवाब सखावत हुसैन खाँ के प्रभाव से उन बिरले अंग्रेजों में थी जो भारत की स्वाधीनता के समर्थक थे। मोमिन खाँ स्पष्टता से कहते हैं कि मिस मैरी का वास्तविक अपराध गदरकालीन क्रान्तिकारी संगठन में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से संलिप्त होना था।5 जनवरी, 1858 में जब अंग्रेज फौजों का फतेहगढ़ पर पुनः अधिकार हो गया तो नवाब सखावत हुसैन खाँ को गिरफ्तार कर लिया गया तथा अंग्रेजों ने उन्हें अत्यन्त अपमान, अमानवीयता एवं बर्बरता से फांसी के फंदे पर चढ़ा दिया।6 अंग्रेज महिला मिस मैरी का आखिर क्या हुआ, यह रहस्य ही है।

सूरजदीन : पं0 सूरजदीन की गणना उस युग के प्रवीण तबला वादकों में होती थी। सूरजदीन का तबलावादन किस परम्परा से सम्बद्ध था, यह तो अज्ञात है किन्तु कहा जाता है कि वे तबलावादक के अतिरिक्त एक कुशल कथावाचक भी थे। संगीत कला के साथ–साथ युद्धकला में भी प्रवीण पं0 सूरजदीन बेगम हजरत महल के आश्रित थे।7 प्रथम स्वाधीनता संग्राम में पं0 सूरजदीन ने सक्रिय भाग लिया। इस प्रसंग में यह आश्चर्यजनक तथ्य है कि लखनऊ पर अंग्रेजों के पुनः अधिकार होने के पश्चात् पं0 सूरजदीन ने औपनिवेशिक शासन की ठीक नाक के नीचे मटियाबुर्ज (कलकत्ता) में शरण ली। कुछ मास पश्चात् जब वे लुकछिप कर अपने परिवारजनों से मिलने लखनऊ के मुहल्ला 'नबहरा' स्थित अपने घर वापस आये तब मुखबिरी हो जाने के कारण गिरतार करके फांसी के फंदे पर लटका दिये गये।8

कुदऊ सिंह : प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी तथा भक्तिभावना से ओतप्रोत स्वाभिमानी विचारों के स्वामी कुदऊ सिंह जी को पखावज का युग पुरूष कहा जाता है।अवध दरबार के पतन के पश्चात् कुदऊ सिंह इतिहास प्रसिद्ध महारानी लक्ष्मीबाई के आश्रय में चले गये। महारानी लक्ष्मीबाई ने कुदऊ सिंह का यथेष्ट आदर सम्मान किया। सन् 1857 ई0 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में झांसी के पतन के पश्चात् उन्हें घायल अवस्था में पकड़ा गया तथा महारानी झांसी के विश्वस्त व निकटस्थ व्यक्ति होने के कारण अंग्रेजों ने उन्हें अपने संरक्षित व मित्र राज्य दतिया की जेल में बन्दी बना कर भेज दिया।9

दतिया में राजा भवानी सिंह के राज्याभिषेक के अवसर पर कुदऊ सिंह को मुक्ति प्राप्त हुई तथा उसके शीध्र पश्चात् कुदऊ सिंह की ख्याति तथा कला से परिचित होकर संगीतप्रेमी राजा भवानी सिंह ने उन्हें अपने दरबार में यथोचित स्थान प्रदान किया। इस प्रसंग की स्मृति में कुदऊ सिंह अपने दाहिने पैर में सदैव बेड़ी पहने रहते थे।10 सन् 1857 ई0 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम के उपरान्त बंदी जीवन की प्रतीक बेड़ी को आजीवन धारण करना उनके स्वातंश्यप्रिय एवं स्वाभिमानी व्यक्तित्व को ओजपूर्ण आभा प्रदान करता है।

मीर मेंहदी हुसैन खाँ रौशन अली : मीर मेंहदी हुसैन खाँ लखनऊ के तहसीनगंज इलाके के निवासी तथा प्रख्यात वीणावादक थे। नवाब वाजिद अली शाह ने इन्हें

'अमीर–उल–उमरा' की उपाधि दी थी तथा शासन में ये महत्वपूर्ण पद पर नियुक्त थे। वीणावादन में इनकी प्रवीणता का अनुमान इस बात से हो जाता है कि उनके साथ वीणावादन में संगत करना सुविख्यात कुदऊ सिंह पखावजिया हेतु भी चुनौतीपूर्ण हुआ करता था तथा अवध दरबार में प्रायः इन दोनो की प्रतिद्वंदितापूर्ण प्रतियोगिताओं का आयोजन होता रहता था।11 प्रथम स्वाधीनता संग्राम के दिनों में इस प्रतियोगिता ने वतन पर मर मिटने की प्रतिद्वंदिता का रूप ग्रहण कर लिया। लखनऊ में स्वाधीनता संग्राम का बिगुल बजते ही मीर मेंहदी हुसैन ने अपने आपको क्रान्ति की ज्वाला में झोंक दिया। 28 रजब 1274 हि0 के दिन युद्ध में मेंहदी हुसैन को प्राणान्तक घाव लगे और उसके दूसरे दिन उनका शरीरान्त हो गया।12 घायल मेंहदी हुसैन को उनका मित्र संगीतज्ञ सुरक्षित स्थान पर ले गया था। मृत्यु निकट थी किन्तु घावों की पीड़ा असहनीय थी। उन्होंने इस पीड़ा के विषय में अपने साथी संगीतज्ञ से कहा तो मित्र ने उत्तर दिया – मृत्यु तो निकट है, अतः अब 'मौत का राग' (?) गाइये। मृत्यु की पीड़ा कुछ कम हो जायेगी और मीर मेंहदी हुसैन ने प्राण त्याग दिये।13

मीर मेंहदी हुसैन के अंतिम समय के यह साथी रौशन अली थे। रौशन अली बड़े मुहम्मद खाँ के शागिर्द थे और गायन में उन्हीं की शैली का अनुकरण करते थे। वे भी अधिक दिन तक अपने प्राणों की रक्षा न कर सके और मीर मेंहदी हुसैन की मृत्यु के ठीक चार–पांच दिन बाद अंग्रेजों से युद्ध करते हुए दरगाह हजरत अब्बास के निकट वीरगति को प्राप्त हुए।14

रामचरणदास तथा चण्डीदासः अयोध्या–फैजाबाद में क्रान्ति का नेतृत्व धर्म क्षेत्र से सम्बन्धित दो व्यक्तियों ने किया – सन्त रामचरणदास एवं मौ0 अमीर अली। प्रथम स्वाधीनता–संग्राम के घटनापूर्ण वर्षों में इन दोनों ने साम्प्रदायिक एकता की ऐसी मिसाल प्रस्तुत की जो आज भी यह सन्देश देती है कि राष्ट्रधर्म से बढ़कर कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं है। हनुमानगढ़ी के सन्त रामचरणदास केवल सन्त ही नहीं थे अपितु अयोध्या में प्रचलित प्राचीन ध्रुवपद गायन परम्परा के प्रवीण गायक भी थे। क्रान्ति के दमन के पश्चात् सन्त रामचरणदास तथा मौ0 अमीर अली दोनों को मृत्युदंड दिया गया।15

अयोध्या के चण्डीदास भी प्राचीन ध्रुवपद परम्परा में पारंगगत गायक थे तथा अपनी कलाप्रवीणता के कारण नवाब वाजिद अली शाह के दरबार में नियुक्त थे। अवध के अपहरण के पश्चात् चण्डीदास अयोध्या वापस चले गये और 1857 में क्रान्ति के विस्फोट के साथ ही स्वातन्त्र्य युद्ध में कूद गये। क्रान्ति के पश्चात् चण्डीदास भूमिगत हो गये तथा उसके पश्चात् उनका क्या हुआ, यह अज्ञात है।16

सादिक अली खाँ तथा अन्यः नवाब वाजिद अली शाह के गुरूजनों में प्यार खाँ, जाफर खाँ तथा ठाकुर प्रसाद जी के साथ सादिक अली का नाम भी सम्मिलित होता है। नवाब वाजिद अली शाह ने संगीतज्ञों को विरूद् तथा प्रशासन एवं सेना में महत्वपूर्ण पद देकर सम्मानित किया था। सादिक अली खाँ 'नवाब' की उपाधि तथा 'सादिक–उद्–दौला बहादुर' के विरूद् से सम्मानित किये गये थे। अवध के नवाबी शासन के पतन की बेला में वे तोपखाना कला आतिश फिशां के कार्याधिकृत पद पर नियुक्त थे।17

सादिक अली खाँ के प्रपौत्र श्री मोमिन खाँ का कहना है कि 1856 ई0 में सादिक अली खाँ का नवाब वाजिद अली शाह के साथ मटियाबुर्ज गमन एक मिथ्या कथन तथा 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम हेतु भ्रमोत्पादक है। वास्तव में अवध के अपहरण के पश्चात् सादिक अला खाँ बरेली चले गये थे। इनके वंश के स्मृति अवशेष सन् 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में बरेली के नवाब खान बहादुर के साथ उनकी सक्रिय भूमिका, बरेली में क्रान्तिकारी शासन के पश्चात् उनके नेपाल पलायन तथा सन् 1870 के दशक में पुनः वापस लौटकर वाजिद अली शाह के मटियाबुर्ज दरबार का अंग बनना इंगित करते हैं। यद्यपि इस स्वाधीनता संग्राम में उनकी वास्तविक भूमिका की स्मृतियां कालगत प्रभाव से धुंधला गयी हैं।18

'नेरेटिव आफ द म्यूटिनी (रूहेलखण्ड क्षेत्र) बरेली 'नेरेटिव', 'अपेंडिक्स 'बी' म्यूटिनी बरेली' में उल्लेख है कि नवाब अवध के दरबार के प्रसिद्ध गायक शुजाउद्दौला उस समय बरेली में निवास करते थे। वह खानबहादुर खाँ के ए0डी0सी0 बनाये गये तथा उत्सवों आदि का भार उन्हीं को सौंपा गया।19 यह असम्भव है कि नवाब वाजिद अली शाह ने अपने किसी दरबारी अथवा संगीतज्ञ को अपने प्रख्यात पूर्व पुरूष की उपाधि नाम से सम्मानित किया होगा। यद्यपि भारतीय इतिहास में अनेक शासकों ने अपने यशस्वी पूर्वजों की उपाधियाँ अथवा विरूद धारण किये हैं किन्तु किसी शासक द्वारा अपने पूर्वज की उपाधि अथवा विरूद्ध से अन्य व्यक्ति को सम्मानित किये जाने का उदाहरण अप्राप्य है। यह स्वभाविक प्रवृत्ति के विरूद्ध है। निश्चित रूप से नैरेटिव के लिपिकारों द्वारा नाम को असावधानीवश शुजाउद्दौला लिखा गया है वस्तुतः प्रथम स्वाधीनता काल में बरेली के प्रसंग में अवध दरबार से सम्बन्धित दो संगीतज्ञों के उल्लेख प्राप्त होते हैं – फर्रूखाबाद के भूतपूर्व नवाब तफज्जुल हुसैन हशमतजंग बहादुर शुजात–उद्–दौला तथा सादिक अली खाँ सादिक–उद्–दौला। यद्यपि नवाब हशमतजंग की

कुछ सम्पत्तियां बरेली में थी किन्तु उनके शुजाउद्दौला होने के विरूद्ध तथ्य यह है कि वरिष्ठता तथा प्रभाव में नवाब खानबहादुर खाँ से उच्चतर होने के कारण उनका नवाब खान बहादुर खाँ का ए0डी0सी0 बनना सम्भव प्रतीत नहीं होता पुनः नैरेटिव में शुजाउद्दौला को स्पष्टतः 'सुप्रसिद्ध गायक' के रूप में इंगित किया गया है जबकि 'शुजात–उद्–दौला' उपाधि धारक नवाब हशमतजंग प्रख्यात सितारवादक थे। अन्य महत्वपूर्ण तथ्य यह है ए0डी0सी0 की यह नियुक्ति दिनांक 2 जून, 1857 को हुई थी।20 उस समय नवाब हशमतजंग फर्रूखाबाद में उपस्थित थे तथा वहां के क्रान्तिकारी शासन का नेतृत्व उन्हीं के कन्धों पर था तथा प्रथम स्वाधीनता संग्राम के दिनों में उनका बरेली आगमन जनवरी 1858 में फर्रूखाबाद में क्रान्तिकारी शासन के पतन पश्चात् ही हुआ तथा यह अल्पकालिक था क्योंकि बरेली पतन के पूर्व ही वे नेपाल प्रस्थान कर गये थे।21 उपरोक्त तथ्यों के दृष्टिगत सादिक अली खाँ के 'शुजाउद्दौला' से साम्यता की सम्भावना अधिक प्रबल प्रतीत होती है।

सुप्रसिद्ध सरोदवादक न्यामतुल्लाह खाँ के प्रपौत्र श्री इरफान खाँ का अपने पारिवारिक स्मृति स्त्रोतों के आधार पर कथन है कि उनके परदादा न्यामतुल्लाह खाँ सन् 1857 की क्रान्तिकारी गतिविधियों में संलग्न थे तथा उनकी भूमिका परोक्ष तथा गुप्तचर गतिविधियों से सम्बन्धित थी। सन् 1867–68 में उनके नेपालगमन की वास्तविक पृष्ठभूमि में क्रान्ति की निरन्तर चल रही जांच–पड़ताल में उनके क्रान्तिकारियों के साथ प्रछन्न सम्बन्धों के कारण संदिग्ध हो जाना था तथा इस कारण स्वयं वाजिद अली शाह के संकेत पर वे नेपाल पलायन कर गये उसके पश्चात् न्यामतुल्लाह दिल्ली दरबार के समय भारत वापस आये तथा वहीं दिल्ली में उनकी मृत्यु हो गयी थी। इरफान खाँ के अनुसार ताज खाँ भी न्यामतुल्लाह खाँ के साथ नेपाल गये थे।22 मोमिन खाँ न्यामतुल्लाह खाँ के क्रान्तिकारियों के साथ प्रछन्न सम्बन्धों की बात करते हैं किन्तु अपनी वंश परम्परागत श्रुतियों के आधार पर उनका कथन हैं कि बरेली पतन के पश्चात् जब सादिक अली खाँ नेपाल पहंचे थे तब शायर बेखुद लखनवी तथा ताज खाँ वहां पहले से उपस्थित थे।23

ठण्डी गलियों का संगीत : न जाने भारत की माटी ने क्या पिया था उस बार कि जिन गलियों में सुर बोये जाते थे, वहां भी तलवारें उग आयी थीं। प्रख्यात अवध संस्कृति विशेषज्ञ श्री योगेश प्रवीन ने लिखा है – 'अगर इन ठण्डी गलियों से एक से एक शोलाबदन, गुन्चादहन राजों–महाराजों के महलों में पहुंची या नवाबों के हरम तक गयी तो यहीं से सन् सत्तावन की जंगे–आजादी में जूझने वाली औरतों ने भी पांव निकाले थे जो तवायफ अंग्रेजों के भेद टटोलती थीं वो यहां के उस मकान से निकली थी जिसके दरवाजे में अब भी सवा मन लोहा लगा है और जिसका सिर्फ एक कुण्डा ही बारह सेर का है।24

इतिहास के पन्ने और लोकश्रुतियों को खंगालने पर रहीमा बीबी, जेबुन्निसा, हैदरी बाई, अजीज़न, हुसैनी, बन्दीजान तथा उमरावजान हमें मनिकापुर (उन्नाव) अथवा मगरासा की अदला, डौंडियाखेड़ा की करीना, लखनऊ की फरहत जान आदि40 अनेक मंगलामुखी संगीत साधिकाओं के उल्लेख प्राप्त होते हैं जिन्होंने उन ठण्डी गलियों को जहां देह–सौन्दर्य की गन्ध उड़ा करती थी, मातृभूमि हेतु अपने त्याग और बलिदान से सुवासित कर दिया था।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Government Gazette (N.W.P.) dt. May 4, 1858, Quoted from Nana Saheb Peshwa, Anand Swarup Mishra, Page-380
2. Ibid, Page- 381 व्यक्तिगत साक्षात्कार – मोमिन खाँ
3. रविवार, अंक, 14 अमस्त, 1988, लेख–1857 का मौन साक्षी फतेहगढ़, प्रतापसिंह राठौर, पृ0–25
4. लिखित आलेख, नवाब इब्राहिम अला खाँ
5. व्यक्तिगत साक्षात्कार श्री मोमिन खाँ एवं श्री इरफान खाँ
6. Reminisence of the Great Muting of 1857-59, Forbes Mitchell, William, Page : 169 - The Nawab was arrested, bound hand and foot, and carried by coolies on a common country charpoy, some sort of crude trial was held and he was santences to be hanged. He was first smeared over with pig's fat, flogged by the sweepers and than hanged This was done by the orders of the Civil Com missioner.
7. Vanishing Culture of Lucknow, Amir Hasan, Page- 116, व्यक्तिगत साक्षात्कार मोमिन खाँ, इरफान खाँ
8. व्यक्तिगत साक्षात्कार – नवाब इब्राहीम अली खाँ
9. पूर्वोद्धत, डॉ0 आबान ए0 मिस्त्री, पृ0–52 व्यक्तिगत साक्षात्कार मोमिन खाँ, इरफान खाँ
10. पूर्वोद्धत, डॉ0 आबान ए0 मिस्त्री, पृ0–52 व्यक्तिगत साक्षात्कार इरफान खाँ

11. Musical Heritage of Lucknow, Shsheela Mishra, Page- 87, व्यक्तिगत साक्षात्कार मोमिन खाँ, इरफान खाँ
12. व्यक्तिगत साक्षात्कार – मोमिन खाँ,
13. व्यक्तिगत साक्षात्कार – नवाब इब्राहीम अली खाँ
14. व्यक्तिगत साक्षात्कार – मोमिन खाँ
15. British Rule in India, S.N. Pandey, Page- 301, कादम्बिनी, मई 2007 लेख– सांझी कुर्बानियां, पृ0–15, व्यक्तिगत साक्षात्कार – ए.पी. गौड़
16. व्यक्तिगत साक्षात्कार – ए.पी. गौड़
17. Afzal-ut-Tawarikh, Page-136 to 142 Quoted from Lucknow 1857, Page- 16 and Images of Lucknow, Page 104, Roshan Taqi.
18. व्यक्तिगत साक्षात्कार – सिंकन्दरजहां बेगम तथा मोमिन खाँ (उ0 सादिक अली खाँ की प्रपौत्री व प्रपौत्र), रविवार अंक 14 अगस्त 1988, पृ0–42
19. नैरेटिव आफ द म्यूटिनी, रूहेलखण्ड क्षेत्र, बरेली नैरेटिव, पृ0–4 तथा अपेंडिक्स 'बी, म्यूटिनी बरेली, पृ0–8 से 11 उदधृत संघर्षकालीन नेताओं की जीवनियं भाग–1, सम्पादक– डा0 सैयद अतहर अब्बास रिजवी, पृ0–132
20. पूर्वोद्धत, नैरेटिव आफ दि म्यूटिनी – पृ0–4
21. Ibid, Anand Swarup Mishra, Page- 379
22. व्यक्तिगत साक्षात्कार – इरफान खाँ
23. व्यक्तिगत साक्षात्कार – मोमिन खाँ
24. डूबता अवध, योगेश प्रवीन, पृ0–102

*****